फरवरी 2024
मूल्य : 10.00 रुपये

मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

पंजीयन क्रमांक : MPHIN/2021/82532
मासिक जागरण पत्रिका

सदियों के संघर्ष के परिणाम स्वरूप अखंड ब्रह्माण्ड के नायक श्री राम का ५०० वर्ष बाद भारत की पुण्यभूमि पर आगमन हुआ है। २२ जनवरी २०२४ से पवित्र सनातन धर्म का पुनरुत्थान प्रारंभ हुआ है। हर भारतीय प्रफुल्लित है।

Azadi Ka Amrit Mahotsav

SHAKTI
PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पम्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल-दर-साल फायदा पहुंचाए.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख-रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण-अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

- HIGH PERFORMANCE CHIP
- MULTIPLE PROTECTION
- AUTOMATIC RECOGNITION
- LIGHT EFFICIENCY TIME CONTROL
- PWN CHARGE
- SIMPLE INSTALLATION

कार्यप्रणाली

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर - 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) - इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: **1800 103 5555**

* नियम व शर्तें लागू

जाग्रत मालवा
इन्दौर दिनांक 5 फरवरी 2024 मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN/2021/82532
वर्ष : 03 अंक : 08
•••
माघ मास
युगाब्द ५१२५

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा
राकेश दांगी
राजेश सोनी
•••
मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी-1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731-3551341
•••
Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी - विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक अरुण सपकाले फोन नं. 0731-3551341

अपनी बात

श्रीराम

श्रीराम लला की प्राण प्रतिष्ठा केवल एक विग्रह की प्रतिष्ठा नहीं यह भारत के सनातन की प्रतिष्ठा है। राम की प्रतिष्ठा राष्ट्र की प्रतिष्ठा है। यह केवल मंदिर का निर्माण नहीं राष्ट्र के पुनर्निर्माण की आधार शिला है। यह राष्ट्रीय गौरव का पुनर्जागरण है। जब शुभ मुहूर्त में श्रीराम लला विराज रहे थे तब करोड़ों सनातनियों के हृदय में भी श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा हो रही थी और सद्भाव, समरसता और हिन्दुत्व का जागरण हो रहा था। कलयुग में भी त्रेता के दर्शन हो रहे थे। करोड़ों आँखों में अश्रुधारा बह रही थी, ये अश्रुधारा श्रीराम के कमल चरणों को पखार रही थी, समाज में कटुता के मैल को धो रही थी। यह स्पष्ट संदेश दे रही थी कि भारत एक था, एक है और सदैव एक रहेगा। क्योंकि भारत की आत्मा धर्म है, बगैर धर्म के भारत प्राण रहित है। श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा धर्म की प्रतिष्ठा पाँच सौ साल के संघर्ष के बाद इस अमृतकाल में इस शुभ अवसर को पाकर जन-जन का मन हर्ष और उल्लास से भरा था। हर कोई इस पावन स्मृति को अपने हृदय में बसा लेना चाहता था।

हम सब बहुत ही सौभाग्यशाली हैं कि इन पावन क्षणों के साक्षी बने। चौरासी सैकंड के शुभ और गौरवमयी क्षणों के लिए हमने और हमारे पूर्वजों ने पाँच सौ वर्ष का संघर्ष किया और यह संघर्ष हर्ष में बदल गया।

प्राण प्रतिष्ठा के बाद प्रत्येक जन रामलला के दर्शन के लिए लालायित है। अपनी सुविधा से आप सदा आमंत्रित हैं। हमारा गाँव, हमारा शहर, हमारी बस्ती, हमारा मोहल्ला अयोध्या धाम बने इस पुनीत भाव के साथ।

घर अपना मंदिर बन जाये
हर ग्राम अवध सा धाम बने
हर परिवार हो रघुकुल जैसा
बच्चा बच्चा राम बने।

मालवा में रामोत्सव

अमन व्यास

रामजी अयोध्या लौट आए हैं, पांच शताब्दियों के पश्चात्........

जब रामजी, अयोध्या लौटे तो पूरा देश अयोध्या हो गया, सर्वत्र राममय वातावरण हो गया। शताब्दियों बाद आए इस रामोत्सव में मालवा -निमाड़ कैसे पीछे रहता, इंदौर-उज्जैन संभाग के 12000 से अधिक गांवों में राम ही राम थे। गांवों में भव्य-दिव्य प्रभात फेरियां निकल रही थीं, फिर कड़ाके की ठंड हो या असमय वर्षा, किसी भी कारण से कारण से रामभक्तों का उत्साह रत्ती भर भी कम नहीं हुआ। बल्कि जैसे -जैसे प्राण प्रतिष्ठा की घड़ी निकट आने लगी, यह उत्साह बढ़ता ही गया।

प्रभात फेरियों के साथ-साथ अब गांवों में अखंड रामायण के पाठ, कन्या भोजन, महाआरती और भंडारे के आयोजन होने लगे। मंदिरों में भक्तों के अभाव में मशीनों से आरती की जा रही थी किंतु श्रीराम जन्मभूमि प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर गांवों के आबालवृद्ध महिला-पुरुषों के मंदिर की आरती में सम्मिलित होने से झांझ -मंजीरे और घंटियां कम पड़ने लगे। महिलाएं सुमधुर कंठों से देवताओं के लोकगीत गाने लगीं, बेटियां **राम आयेंगे तो अंगना सजाऊंगी** गाते हुए रंगोली बनाने लगीं, युवा लड़के डीजे पर **कीजो केसरी के लाल** जैसे भजनों पर थिरकने लगे और चौपालों पर वृद्धजन अपने कारसेवा के अनुभव सुनाने लगें। लगभग 2 माह में शनैः-शनैः मालवा निमाड़ के लगभग सभी गांव राममय हो गए।

मालवा -निमाड़ में इस अवसर पर कई शुभकार्य हुए, कई जगह कारसेवकों को सम्मानित किया गया तो कई जगह स्वतंत्रता सेनानियों को, अनेकों स्थानों पर जीर्ण -शीर्ण हो चुकी बावड़ियों और मंदिरों की स्वच्छता और जीर्णोद्धार का कार्य हुआ तो कई गांवों में मंदिरों में प्राण-प्रतिष्ठा भी हुई और मालवा निमाड़ में यह आंकड़ा 10 -20 में नहीं बल्कि सेंकड़ों की संख्या में है।

राम मंदिर में मालवा - श्रीराम जन्मभूमि मंदिर, राष्ट्रमंदिर है। वहां न केवल भारत के प्रत्येक जन का योगदान है बल्कि प्रत्येक प्रांत की भूमिका भी है।

नर्मदेश्वर महादेव - ओंकारेश्वर से मां नर्मदा की गोद से प्राप्त दिव्य नर्मदेश्वर महादेव को श्री राम जन्मभूमि के परकोटे में स्थापित किया जाएगा। शिवलिंग जब रथयात्रा के माध्यम से अयोध्या पहुंच रहा था, तब ग्राम-नगर के हजारों रामभक्तों ने पुष्पवर्षा कर स्वागत किया था।

दिव्य दीपक - मालवा के रतलाम से अयोध्या के लिए चांदी का एक सुंदर दीपक भेजा गया। दीपक कई विशेषताओं से परिपूर्ण है। दीपक को प्राण -प्रतिष्ठा के समय मुख्य पीठ के समीप प्रज्वलित किया गया और यह दीपक अखंड ज्योति के रूप में सदैव रामलला के गर्भगृह में प्रज्वलित होता रहेगा।

महाकाल की अपने रामलला को भेंट - उज्जैन स्थित विश्वप्रसिद्ध महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग द्वारा श्रीरामजी के दर्शन करने आने वाले भक्तों के लिए पांच लाख लड्डुओं का प्रसाद भेजा गया। स्वयं प्रदेश के मुख्यमंत्री जी ने प्रदेशवासियों की ओर से विशेष वाहनों द्वारा लड्डुओं को भेजा।

इसी तरह मध्यप्रदेश के बैतूल से संपूर्ण मातंग समाज द्वारा श्रीराम मंदिर गर्भगृह के लिए चांदी की झाड़ू अर्पित की। जब झाड़ू इंदौर होते हुए अयोध्या जा रही थी तो प्रत्येक रामभक्त झाड़ू को प्रणाम निवेदित करने लगा।

पूरे देश की तरह मालवा -निमाड़ (इंदौर -उज्जैन संभाग) के भी सभी जिलों के प्रत्येक नगर -कस्बे और गांव राममय हो गए। घरों के बाहर **मेरा गांव -मेरी अयोध्या** के पोस्टर चस्पा हो गए। घरों की छतों पर भगवा ध्वज लहरा रहे थे और रामधुन संकीर्तन चल रहे थे, मालवा, अयोध्या हो गया ....

श्रीराम जन्मभूमि प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर मालवा के गांवों के आबालवृद्ध महिला-पुरुषों के मंदिर की आरती में सम्मिलित होने से झांझ -मंजीरे और घंटियां कम पड़ने लगे। महिलाएं सुमधुर कंठो से देवताओं के लोकगीत गाने लगीं, बेटियां 'राम आयेंगे तो अंगना सजाऊंगी' गाते हुए रंगोली बनाने लगीं, युवा लड़के डीजे पर 'कीजो केसरी के लाल' जैसे भजनों पर थिरकने लगे और चौपालों पर वृद्धजन अपने कारसेवा के अनुभव सुनाने लगे। लगभग 2 माह में शनैः -शनैः मालवा- निमाड़ के लगभग सभी गांव राममय हो गए।

प्राण प्रतिष्ठा

कवि राकेश दांगी (इंदौर)

यह प्राण प्रतिष्ठा है 500 वर्षो के वनवास की,
यह प्राण प्रतिष्ठा है सत्य सनातन अविनाश की,
यह प्राण प्रतिष्ठा है धैर्य,आस्था और विश्वास की,
यह प्राण प्रतिष्ठा है संपूर्ण विश्व के विकास की।

यह प्राण प्रतिष्ठा है पांचजन्य आह्वान की,
यह प्राण प्रतिष्ठा है भारत देश महान की,
यह प्राण प्रतिष्ठा है कोठारी बंधु के देहदान की,
यह प्राण प्रतिष्ठा है पुरखों के बलिदान की।

यह प्राण प्रतिष्ठा है बजरंगियों के अभियान की,
यह प्राण प्रतिष्ठा है केशव-माधव के वरदान की,
यह प्राण प्रतिष्ठा है भगवा के स्वाभिमान की,
यह प्राण प्रतिष्ठा है हिंदी, हिंदू, हिंदुस्तान की।

यह प्राण प्रतिष्ठा है कारसेवकों के यशगान की,
यह प्राण प्रतिष्ठा है लोकमंगल के वरदान की,
यह प्राण प्रतिष्ठा है श्री सिंघल के अभिराम की,
यह प्राण प्रतिष्ठा है कल्याण के आठों याम की।

यह प्राण प्रतिष्ठा है मानवता के उत्थान की,
यह प्राण प्रतिष्ठा है नव युग के प्रतिमान की,
यह प्राण प्रतिष्ठा है सरयू मैया के गुणगान की,
यह प्राण प्रतिष्ठा है मोदी-योगी कीर्तिमान की।

यह प्राण प्रतिष्ठा है समरसता के भगवान की,
यह प्राण प्रतिष्ठा है संस्कृति के सम्मान की,
यह प्राण प्रतिष्ठा है पावन श्रीराम के नाम की,
यह प्राण प्रतिष्ठा है भारत के पांचवे धाम की।

यह प्राण प्रतिष्ठा है गीता ग्रंथ वेद पुराण की,
यह प्राण प्रतिष्ठा है जनमानस के कल्याण की,
यह प्राण प्रतिष्ठा है राष्ट्र मंदिर के निर्माण की,
यह प्राण प्रतिष्ठा है सनातन धर्म के प्राण की।।

राम मंदिर उद्घाटन - भारतीय विदेश वासियों का उत्साह

अनव रघुवंशी

22 जनवरी 2024 का 12 बजकर 29 मिनट आठ सेकेंड से शुरू मात्र 84 सेकेंड वो अभिजीत मुहूर्त जिसका इंतजार विगत 500 वर्षों के निरंतर, कर्मठ संघर्ष के बाद आया है। जब प्रत्येक हिंदुओं की आस्था के केंद्र, जनकपुर के दामाद, अयोध्या के राजा राम की जन्मभूमि पर अद्भुत और अनन्य मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा होगी। ये वह समय है जिसका इंतजार न केवल भारतीयों को वरन पूरे विश्व भर में फैले हिंदू समुदाय के लोगों को है। पूरा भारतवर्ष अपने राम का स्वागत करने के लिए अलौकिक आभा से चमक उठा है। या यूं कहूं पूरा विश्व राजाराम की प्राण प्रतिष्ठा के लिए आतुर है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। देश-विदेश के लोग इस आयोजन में सम्मिलित होना चाहते हैं, जो नहीं आ पा रहे हैं वे जहाँ हैं उसी स्थान को अयोध्या सा सजाकर जश्न मना रहे हैं। इस ऐतिहासिक पल के साथ, विदेशवासी भारतीयों में समर्थन, आत्म गर्व और आध्यात्मिक आस्था की ऊँचाई का सामंजस्य देखा जा रहा है। वह राम मंदिर के उद्घाटन को सांस्कृतिक पुनर्निर्माण के रूप में स्वीकार कर उनका गौरव और समर्थन सोशल मीडिया के माध्यमों से व्यक्त कर रहे हैं। मैंने राम लीला का निर्देशन किया है, मैं और मेरा पूरा परिवार राममय हो चुका है। बाला धरणीधरन, जो हर साल टैक्सास के फ्रिस्को (डलास) में अपने निवास पर अय्यप्पा पूजा करते हैं, ने कहा कि वह फ्रिस्को में वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में अभिषेक समारोह में भाग लेंगे, जबकि उनके एक दोस्त और भाई लॉस एंजिल्स में ऐसा करेंगे। एकता और विश्वास का जश्न मनाने वाले एक ऐतिहासिक क्षण में एनआरआई दुनिया भर में दिवाली समारोह के समान इस शुभ अवसर को मनाने के लिए एकजुट हैं। राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा एनआईआई संगठन ने एथेंस, ग्रीस, सिंगापुर, थाईलैंड, न्यूजीलैंड सहित दुनिया के विभिन्न कोनों से मंदिरों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। फिनलैंड, यूके, फिलीपींस, चीन, मलेशिया, वेस्ट इंडीज, यूक्रेन, म्यांमार, पेरू, ऑस्ट्रेलिया, पुर्तगाल, रूस, केन्या, दक्षिण अफ्रीका, रवांडा, बुरूंडी, नाइजीरिया, दार एस सलाम, कैमरून सेंट्रल, कंपाला, युगांडा और अन्य दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले डॉ. प्रवीण केंद्रेकर के मुताबिक इस दिन को खास बनाने के लिए 52 देशों में रहने वाले हिंदुओं से संपर्क किया गया है। केन्या, अफ्रीका से आए विमल चड्ढा का कहना है कि केन्या की हिंदू परिषद, जिसके तहत 150 से अधिक संगठन संचालित होते हैं, 19 से 22 जनवरी तक सांस्कृतिक कार्यक्रमों की

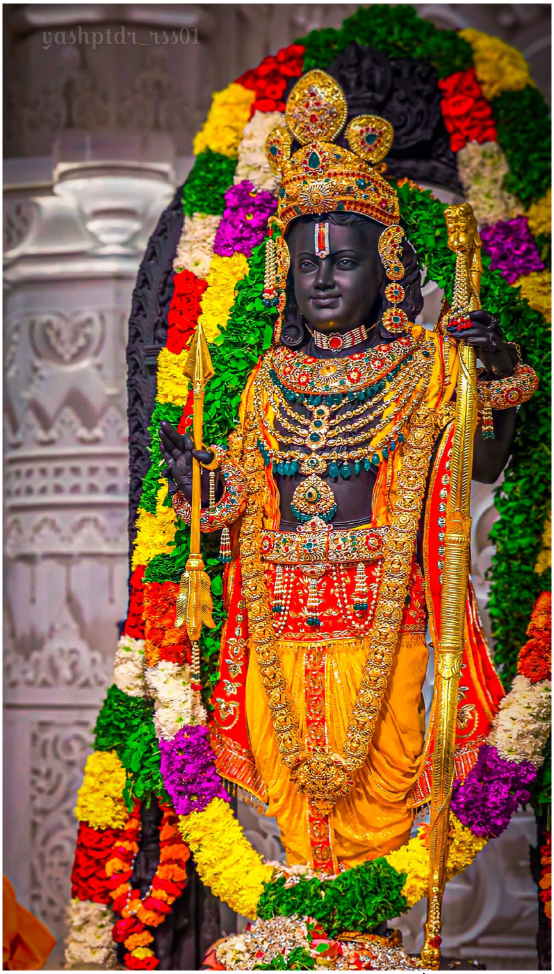

शुरूआत करेगी। सभी आयोजन ये उत्साह बताते हैं कि ना केवल भारत में पूरे विश्व भर को रामलला का बेसब्री से इंतजार है।

'जड़ें एक ही लेकिन देश अलग' थाईलैंड के अयुत्या शब्द की जड़ें भगवान राम की जन्मस्थली अयोध्या में हैं। अयुत्या क्षेत्र में सनातन के प्रभाव को इंगित करता है और 'रामकियेन' से जुड़ा है (रामायण का थाई संस्करण)। राम जन्मभूमि के ऐतिहासिक आयोजन के अवसर पर विश्व हिंदू परिषद एसोसिएशन, थाईलैंड 22 जनवरी 2024 को देव मंदिर, बैंकॉक में यादगार कार्यक्रम **'राम फिर लौटे'** मना रहा है। थाईलैंड के सुशील कुमार सराफ ने बताया कि राम मंदिर से लाया गया प्रसाद भक्तों के बीच वितरित किया जाएगा। विनियमन मंत्री डेविड सेमोर, जो 2025 में न्यूजीलैंड के अगले उप प्रधान मंत्री बनने वाले हैं, ने कहा, 'जय श्रीराम' यह

एक ऐसे स्मारक का अद्भुत उत्सव है जो हजारों वर्षों तक कायम रहेगा। यह सचमुच एक सुंदर मंदिर है। यह मुझे जॉन कीट्स (कवि) के शब्दों की याद दिलाता है कि सौंदर्य ही सत्य है, सत्य ही सौंदर्य है। राम मंदिर आस्था, सरलता और विश्वास के ऐसे स्मारक बनाने के मानवता के प्रयास के साथ-साथ सच्चाई और सुंदरता का आदर्श उदाहरण है। मैं कामना करता हूं कि मोदी जी को एक अरब से अधिक लोगों की चुनौतियों को महत्वपूर्ण बनने से पहले देखने का साहस, ज्ञान और शक्ति मिले। न्यूजीलैंड की जातीय समुदाय मंत्री मेलिसा ली ने कहा है कि भगवान राम के पवित्र जन्मस्थान को पुनर्जीवित करना और इतिहास में वापस जाकर संबंध स्थापित करना एक शानदार बात है, 500 से अधिक वर्षों के बाद अयोध्या में राम मंदिर के उद्घाटन पर पीएम मोदी को बधाई और इस महत्वपूर्ण उपलब्धि को हासिल करने के लिए पूरे देश को बधाई। भारतवर्ष के प्रत्येक नागरिक को ढेरों बधाइयों के साथ विश्व भर में फैले हिंदुओं द्वारा रामलला को कई उपहार भेंट किए जा रहे हैं। वे सभी यथासंभव सामान सामग्री और परिस्थिति में अपने रामलला की पूजन, प्रतिष्ठा और अनुकंपा के लिए अपने अपने तौर-तरीकों से पूजा पाठ का कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं। ऑकलैंड में भारतीय मंदिर के मुख्य पुजारी पंडित उपेंद्र शास्त्री ने कहा, 'हम अपने जीवनकाल में भगवान राम की अयोध्या में घर वापसी का गवाह बनने के लिए बहुत भाग्यशाली हैं। न्यूजीलैंड में वैदिक अनुष्ठानों और हिंदू परंपराओं के साथ किए जा रहे महायज्ञ, प्राण प्रतिष्ठा और मूर्ति स्थापना समारोह के साथ, हमें ऐसा महसूस हो रहा है जैसे हम अयोध्या में ही भगवान राम की सच्ची भावना और शिक्षाओं का जश्न मना रहे हैं। दिव्य ज्योति जाग्रति संस्थान की सदस्य हेमलता जैन ने कहा, 'हम वर्षों से अयोध्या राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह का इंतजार कर रहे थे। अब जब यह हकीकत बन गया है तो हमारे लिए इससे बड़ी खुशी की बात नहीं हो सकती। ऑकलैंड में रहने वाली एक 90 वर्षीय भारतीय महिला ने पांच शताब्दियों से अधिक समय से पीढ़ियों द्वारा संजोए गए सपने को पूरा करने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को अपना आशीर्वाद दिया। उन्होंने कहा, 'पीएम मोदी ने अयोध्या में राम मंदिर का वादा पूरा किया है और अयोध्या आने वाले तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए सभी सुविधाओं का भी ध्यान रखा है।' ऑकलैंड में रहने वाले तेलुगु समुदाय के सदस्य ने कहा, अयोध्या में मंदिर का निर्माण न केवल हिंदुओं बल्कि अन्य समुदायों को भी एक शक्तिशाली संदेश देता है, क्योंकि मर्यादा पुरूषोत्तम के मूल्य सभी के लिए प्रेरणा के रूप में काम करते हैं। एक अन्य भक्त मनधीर सिंह नेगी ने अपने विचार अभिव्यक्त किए, मुझे बेहद खुशी है कि यहां न्यूजीलैंड में राम मंदिर प्रतिष्ठा समारोह का जश्न मनाने के लिए एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया है। ऐसा लगता है जैसे हम भारत में हैं और अयोध्या में ही समारोह देख रहे हैं। हमने सोचा भी नहीं था कि ऐसा कभी होगा लेकिन मोदी जी के प्रयासों से अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण संभव हो सका है। ये सभी बातें, बधाई बताती हैं कि राम मंदिर उद्घाटन का आयोजन एक देश, शहर, प्रान्त तक ही सीमित नहीं। ये तो सरहदों की बंदिशों से मुक्त सर्वव्यापी उत्सव, पर्व और आनंद की लहर प्रवाहित करने वाला ऐतिहासिक क्षण है, जो पूरे विश्व में हिंदुत्व का परचम बड़ी शान से लहराएगा।

पुरी वई सोगन्ध राम की

डॉ. राजेश रावल 'सुशील'

पुरी वई सोगन्ध राम की, पुरा व्या अरमान जी।
मनी अवध में दिवाळी भई, विराज्या भगवान जी ।।

सबमें राम हे, सबका राम हे, इणका, उणका ने म्हारा ।
निकळी री परभात फेरियां, गूंजीरिया हे जयकारा।
ढोलक, ढफली, झांझ-मजीरा पे छेड़ी रिया तान जी।

मंदिर-मंदिर राम भजन, हनुमान चालीस्या वयरिया हे ।
घरे-घर दीपक माळ सजी री, तोरणद्वार सजयरिया हे ।
रामकाज में लग्या ई लोगां लागे जणे हनुमान जी।

भाला, बरछी, तीर, कटारी, बंदूकां की गोळी ।
राम जन्मभूमि का खातर, खेली खून की होळी ।
तन से, मन से, धन से, जाणे कतरा व्या बलिदान जी।।

मोहन, मोदी, योगी, जाणे ब्रह्मा, विष्णु, महेश।
सगळा देवता भेळा वयग्या धरी ने साधु भेष।
रामलला की प्राण प्रतिष्ठा, आया सब विद्वान जी ।।

सुशील कामना पुरी वई गी, जो थी सालों साल से।
रामलला आया मंदिर में, निकळी ने तिरपाल से।
बड़ी सनातन की दुनिया में, आन बान और शान जी ।
जय जय श्री राम।।

सामाजिक समरसता के पुरोधा भगवान श्री राम

अरुण पटेल

सामाजिक समरसता का यदि कोई सबसे बड़ा प्रतीक है तो वह हैं भगवान श्री राम और कहें कि श्रीराम ही समरसता का पर्यायवाची है तो इसमें कोई दोराय नहीं होगी। भगवान श्रीराम का जीवन हम सभी के लिए एक आदर्श है कि कैसे समाज के हर वर्ग, हर जाति, हर वर्ण के लोगों को अपने साथ लेकर आगे बढ़ा जाता है और अपने हर कर्तव्य को कैसे निभाया जाता है। भगवान श्रीराम के जीवन के प्रसंगों को देखें तो उसमें उन्होंने बहुत छोटी सी उम्र में अपने पिता का वचन निभाने के लिए अपना पूरा राज पाट त्याग दिया। अपने पिता के वचन की लाज के लिए वह जंगलों में चले गए और एक राजकुमार होकर भी वनवासी का जीवन व्यतीत करने लगे।

श्री राम के लिए जात-पात से बढ़कर प्रेम था - समरसता के भाव की बात करें तो श्री राम ने जंगल में केवट की मदद ली, जाति को देखे बिना भगवान श्री राम ने उन्हें अपना **सखा** कहकर संबोधित किया और अपने गले से लगाया। सीता मां के हरण के समय गिद्धराज जटायु ने सीता मां को बचाने के लिए अपनी जान दे दी, उसके बाद भगवान श्री राम ने मांसाहारी पक्षी गिद्धराज जटायु, जो वर्तमान में एक निकृष्ट पक्षी है, उन गिद्धराज को पिता तुल्य सम्मान देकर उनका अंतिम संस्कार किया।

अपनी वनवास की यात्रा में आगे जाकर उन्होंने **शबरी** जो एक भील समुदाय की नारी थी, लक्ष्मण के मना करने के बावजूद भी उनके झूठे बेर खाए और उन्हें अपनी **माता** कहकर संबोधित किया। तत्पश्चात् भगवान श्री राम ने वानर सेना की सहायता ली। अगर वे चाहते तो अयोध्या या जनकपुरी से सहायता ले सकते थे, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया और हनुमान की भक्ति, प्रेम भाव को देखकर उन्होंने कहा-

सुनु कपि जेहि मानसु जनि ऊना, तैं मम प्रिय लक्ष्मण ते दूना

अर्थात्, हनुमान तुम मुझे अपने भाई लक्ष्मण से भी अधिक प्रिय हो। भगवान श्री राम सिर्फ और सिर्फ प्रेम के भूखे थे और वह समाज के हर वर्ग जाति के लोगों को अपने साथ लेकर आगे बढ़ना भली-भांति जानते थे।

दंड देने में भी कर्मों को ही आगे रखते थे श्री राम - रावण कितना बड़ा विद्वान था, जिसे चारों वेदों का ज्ञान था, शिव का भी महा भक्त था और जाति से ब्राह्मण था लेकिन उसके गलत आचरण के चलते भगवान श्री राम ने उसकी जाति, उसकी विद्वत्ता के बारे में एक बार भी सोचे बगैर उसे दंड दिया। भगवान श्री राम का अवतार किसी वंचित को मारने के लिए नहीं बल्कि अत्याचार, अहंकार और जीवनमूल्यों के दुश्मनों को खत्म करने के लिए हुआ था।

मित्रता में भी अव्वल थे भगवान श्री राम - मित्रता निभाने में भगवान श्री राम से आगे कोई भी नहीं है। उनकी मित्रता कभी भी जाति-पाति या वर्ग देखकर नहीं हुई, वे सिर्फ कर्म को देखकर ही किसी व्यक्ति का आकलन किया करते थे और उसी अनुसार व्यवहार किया करते थे। युद्ध भूमि में विभीषण की ओर आ रहे तीर को भगवान ने अपनी छाती पर ले लिया। विभीषण ने श्री राम से पूछा कि आपने शत्रु के भाई को बचाने के लिए तीर अपने ऊपर क्यों ले लिया? तब भगवान श्री राम ने उत्तर दिया कि **मित्रता जाति-पाति को नहीं देखती, सच्चा मित्र वही है जो अपने मित्र की हर मुसीबत को अपने पर ले ले।।**

वैसे ही रावण की मृत्यु के बाद भी जब विभीषण रावण का अंतिम संस्कार करने में सकुचा रहे थे तब भगवान राम बताते हैं कि किसी मनुष्य का बैर उसके जीवन काल तक ही सीमित होता है उसकी मृत्यु के साथ ही उसके बैर की भी मृत्यु हो जाती है। साथ ही साथ उन्होंने लंका की सभी स्त्रियों को सांत्वना दी और लक्ष्मण से कहकर महाराज विभीषण का राजतिलक करवाया। उन्होंने कभी किसी के राज्य की लालसा नहीं की।

भगवान श्री राम के आदर्श सर्वोपरि हैं - आज कई सालों के संघर्ष के बाद भगवान श्री राम की जन्म भूमि अयोध्या में उनका मंदिर एक बार पुनः स्थापित किया जा रहा है। 22 जनवरी को उनकी प्राण प्रतिष्ठा होने वाली है। यहां भी सामाजिक समरसता को बनाए रखने के लिए दूसरे पक्ष यानी मुस्लिम पक्ष को भी उनकी मस्जिद बनाने के लिए जमीन दी गई और उस मस्जिद को बनाने का वचन भी दिया गया। शायद यह सब भी भगवान श्री राम के आदर्शों का ही कमाल है।

भगवान श्री राम ने अपने बचपन से लेकर अवतार के आखिरी समय तक अपने हर कर्तव्य को पूरी सत्यता के साथ निभाया। अपने जीवन को पूरी मर्यादा में रहकर व्यतीत किया इसलिए ही वे मर्यादा पुरुषोत्तम भी कहलाए और सामाजिक समरसता का सबसे बड़ा प्रतीक बन गए और हमेशा रहेंगे। यदि हम उनके जीवन के एक आदर्श को ही अपने जीवन में उतार ले तो हमारे समाज में भी जो परेशानियां हैं वह दूर की जा सकती हैं।

जाति-पाति ना देखो तुम, भेदभाव को दो विराम।
कर्मों से होगा सबका न्याय, यही सिखा गए श्री राम।।

सनातन धर्म का पुनरूत्थान - अयोध्या श्रीराम जन्मभूमि मंदिर

डॉ. सुब्रतो गुहा

''सबसे निराली महिमा है भाई, दो अक्षर के नाम की।
जय बोलो सियावर राम की।''

सनातन हिन्दू धर्म के आराध्य देवों में प्रभु श्रीराम का प्रमुख स्थान है। त्रेतायुग में भगवान विष्णु ने ही धर्म नगरी अयोध्या में दशरथ नंदन श्रीराम के रूप में इस पृथ्वी पर अवतार लिया था। अयोध्या नगरी में प्रभु श्रीराम के जन्मस्थान पर एक अति सुन्दर भव्य श्रीराम जन्मभूमि मंदिर का निर्माण हुआ था जो हिन्दू समाज की आस्था का पवित्र केन्द्र बना और दूर-दूर से निष्ठावान हिन्दू प्रभु श्रीराम के दर्शन तथा पूजन हेतु आते थे। परन्तु सन् 1528 में प्रथम मुगल शहंशाह बाबर के सेनापति मीरबाकी ने उस भव्य श्रीराम जन्मभूमि मंदिर का विध्वंस कर वहां बाबरी नामक एक इस्लामी ढाँचे का निर्माण किया। इस भव्य मंदिर के विध्वंस को रोकने का प्रयास करते हुए हजारों हिन्दू बलिदानी बने।

श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के मूल स्वरूप में अपने प्रभु श्रीराम की आराधना की इच्छा लिए प्रत्येक पीढ़ी के हिन्दू नर-नारियों ने साहसपूर्वक धर्म निष्ठा से संघर्ष किया और अपने प्राणों का बलिदान दिया- इस आशा के साथ कि उनका बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा। उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में पहले ब्रिटिश न्यायालयों में और फिर स्वतंत्र भारत के न्यायालयों में अपने प्रभु का मंदिर प्राप्त करने हेतु हिन्दू समाज ने कानूनी संघर्ष भी जारी रखा।

आखिरकार दिनांक 9 नवंबर 2019 को भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने ऐतिहासिक निर्णय दिया कि 6 दिसंबर 1992 को रामभक्त कारसेवकों द्वारा ढहा दिए गए बाबरी ढाँचे का स्थान ही प्रभु श्रीराम का जन्म स्थान है तथा इस पूरे परिसर को श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण हेतु हिन्दू समाज को सौंप दिया गया। समूचे भारत के करोड़ों निष्ठावान हिन्दुओं के आर्थिक योगदान से अब प्रभु श्रीराम के जन्म स्थान पर एक अत्याधिक सुन्दर भव्य श्रीराम जन्मभूमि मंदिर का निर्माण हुआ है एवं पौष शुक्ल द्वादशी विक्रम संवत 2080 दिनांक 22 जनवरी 2024 को दोपहर साढ़े बारह बजे नवनिर्मित भव्य श्रीराम जन्मभूमि मंदिर रूपी निवास में हमारे प्रभु श्रीराम लौटेंगे।

त्रेता युग में जब राक्षस रावण का वध कर भगवान श्रीराम अपनी विजयी सेना के साथ अयोध्या लौटे थे तब खुशी से झूमते अयोध्या वासियों ने दीपक जलाकर दिपावली उत्सव मनाया था। त्रेता युग में तो प्रभु श्रीराम चौदह वर्षो का वनवास काटकर अयोध्या लौटे थे परन्तु इस कलयुग में 1528 से अब तक के कालखंड में पूरे चार सौ छियानवें वर्ष के वनवास के बाद प्रभु श्रीराम अपने निवास अर्थात श्रीराम जन्मभूमि मंदिर लौटेंगे इसलिए सौ करोड़ सनातनी रामभक्तों के मन में एक अलौकिक आनंद है।

दिनांक 11 मई 1950 को गुजरात में मुस्लिम आक्रान्ताओं द्वारा ध्वस्त किए गए सोमनाथ मंदिर के नवनिर्मित भव्य स्वरूप के उद्घाटन हेतु राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जाने वाले थे, तब हमारे प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें इस मंदिर के उद्घाटन से हिन्दू पुनरूत्थान का खतरा बताते हुए वहाँ जाने से मना किया परन्तु निष्ठावान सनातनी हिन्दू राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने फिर भी वहाँ पहुँचकर सोमनाथ मंदिर का उद्घाटन किया तथा प्राण प्रतिष्ठा में सहभागी बने। इस बार भी 22 जनवरी को श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा समारोह से हिन्दू पुनरूत्थान का खतरा बताने का कुत्सित कार्य भारतीय सेकुलरवादी कर रहे हैं। परन्तु वे नहीं जानते कि हिन्दू पुनरूत्थान तो हो ही चुका है, और रामभक्त उद्घोष कर रहे है। '' राम सभी के मन में है, राज जन्म में, राम मरण में, राम बसा कण-कण में है।''

सनातन धर्म का पुनरूत्थान - अयोध्या श्रीराम जन्मभूमि मंदिर

श्रीराम सामाजिक समरसता के प्रतिबिंब हैं। जीवन के सबसे कष्टकारी समय में भी श्रीराम ने अपने सहयोगी और सलाहकार वनवासियों को ही बनाया, जिसमें केवट, निषाद, भील, वानर, भालू सम्मिलित रहे। यदि श्रीराम चाहते तो अयोध्या अथवा जनकपुर से सहायता ले सकते थे परंतु उनके साथी वे जन बने जिन्हें आज आदिवासी, दलित, पिछड़ा या अति पिछड़ा कहकर संबोधित किया जाता है। इन सभी को श्रीराम ने बार-बार 'सखा' कहकर संबोधित किया है तो वनवासी हनुमान को लक्ष्मण से अधिक प्रिय बताया है।

वनवासी राम का संपूर्ण जीवन सामाजिक समरसता का अनुपम उदाहरण है। श्रीराम ने वनगमन के समय प्रत्येक कदम पर समाज के अंतिम व्यक्ति को गले लगाया। केवट को गले लगाकर श्रीराम संदेश देते हैं कि बाहर भले ही सब अलग दिखते हों लेकिन अंदर सभी एक हैं। सामाजिक समरसता श्रीराम के जीवन में केवल बौद्धिकता का विषय नहीं थी बल्कि उनके आचरण में, संस्कारों में, रग-रग में, रची -बसी थी। श्रीराम ने अपने संपूर्ण वनवास काल में समाज को एकता के सूत्र में पिरोने का काम पूरे कौशल के साथ किया। समाज की संगठित शक्ति के बल पर श्रीराम ने असुरी प्रवृत्ति पर प्रहार किया। अपने संपूर्ण जीवन में श्रीराम ने सभी वर्गों, सभी जातियों, सभी समूहों के मध्य प्रेम व सहयोग की भावना का संचार किया। उन्होंने अपने आचरण से सिद्ध किया कि समाज में परस्पर सहयोग से प्राक्रमी रावण जैसी अजेय शक्ति को भी परास्त कर राजराज्य की स्थापना की जा सकती है, जिसमें समाज के सभी समुदाय के लोग निर्भीक होकर अपने जीवन-यापन और उन्नति के मार्ग को अपना सकते हैं। शबरी की परम भक्ति को स्वीकारने वाले श्रीराम जूठे बेर खाकर यह संदेश देते हैं कि प्रेम की निस्वार्थ भक्ति से मुझे कोई भी पा सकता है, घृणा से कदापि नहीं। निषाद हो अथवा केवट, विभीषण हो अथवा सुग्रीव, सभी ने श्रीराम को पाया तो केवल समरसता के भाव के साथ।

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते हैं।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

इसलिए राममंदिर -राष्ट्रमंदिर है

डॉ. शालिनी रातोरिया

अयोध्या में रामलला विराज गए हैं, रामोत्सव में पूरा देश लगभग एक माह तक रंगा रहा, गाँवों - नगरों - बस्तियों में विशाल प्रभात फेरियां आयोजित हुईं, सर्वत्र एकता -एकात्मता और समरसता के ही दर्शन ही हुए। राम मंदिर को राष्ट्र मंदिर की संज्ञा दी गई और राम मंदिर सच में राष्ट्र मंदिर हो गया और सम्पूर्ण देश ही नहीं तो विश्व की मंदिर निर्माण में भूमिका ने इसे राष्ट्र मंदिर ही नहीं तो विश्व मंदिर बना दिया।

निधि सर्मपण अभियान- सर्वोच्च न्यायालय द्वारा श्रीराम मंदिर के पक्ष में निर्णय आने के बाद, एक न्यास (ट्रस्ट) का गठन किया गया, न्यास ने निर्णय किया कि मंदिर किसी सरकारी सहायता अथवा कुछ बड़े उद्योगपतियों की सहायता से बनने के बजाय देश के प्रत्येक रामभक्त के द्वारा अपनी श्रद्धा से दान की गई श्रद्धा निधि से बनेगा, इसके लिए व्यापक योजनाएं बनाई गईं और देश के प्रत्येक व्यक्ति-प्रत्येक वर्ग ने अपनी बचत से-अपना कुछ त्यागकर, भगवान के मंदिर के लिए समर्पण किया। इसमें भिक्षुक -श्रमिक और समाज के ऐसे वर्ग भी थे जिन्हें दिन में एक समय के भोजन के लिए भी अत्यंत श्रम करना होता है, पर रामजी के लिए श्रद्धा का पारावार ही इतना अधिक था।

देश के प्रत्येक कोने की भूमिका- अपने निमाड़ के ओंकारेश्वर से नर्मदा जी से प्राप्त शिवलिंग को एक विशेष वाहन से यात्रा के माध्यम से अयोध्या जी ले जाया गया, राममंदिर के परकोटे में एक मंदिर में वह स्थापित होगा। संपूर्ण विश्व से आने वाले रामभक्त, भगवान नर्मदेश्वर का दर्शन भी कर पाएंगे और यह भी जान पाएंगे कि नर्मदा जी एक मात्र नदी है, जहाँ का कंकर-कंकर शंकर होता है। उज्जैन के महाकाल मंदिर से 5 लाख लड्डू अयोध्या में प्रसाद के लिए भेजे गए। आभूषण नगरी रतलाम से चांदी का भव्य दीपक भी अखंड ज्योति के लिए अयोध्या भेजा गया। छत्तीसगढ़ से 3 हजार क्विंटल चावल अयोध्या भेजा गया। उत्तरप्रदेश के एटा में अष्टधातु से बना 21 किलो का घंटा राम मंदिर में स्थापित किया गया। गुजरात के वडोदरा में बनी 3500 किलो की और 108 फीट लंबी अगरबत्ती भी अयोध्या में प्रजव्वलित की गई, जिसकी महक से अयोध्या एक महीने तक महकेगी। इसी के साथ मंदिर निर्माण में भी संपूर्ण देश के साथ ही विश्व के अनेकों देशों के श्रमिकों -योजकों और सामग्रियों का योगदान हुआ है।

विश्व मंदिर - इसी तरह जिस शिला से भगवान रामलला की मनोहर प्रतिमा का निर्माण हुआ है, वह नेपाल की गण्डकी नदी से प्राप्त हुई है, रामशिला के अयोध्या आने के पश्चात संपूर्ण विश्व को ध्यान आया कि गंडकी की पवित्र शिला स्वयं **शालिग्राम** होती है। साथ ही गण्डकी नदी नेपाल में बहती है, नेपाल माँ सीताजी का पीहर भी है, इससे भारत के प्राचीन राष्ट्र होने की संकल्पना को भी बल मिलता है। नेपाल के जनकपुर से ही रामलला को वस्त्र-फल-मिठाइयां-मक्खन -दही-चांदी के बर्तन और उपहारों से सजे 1100 थाल भेजे गए। प्राण प्रतिष्ठा के दिन जो उत्सव भारत में था, नेपाल में उससे बिलकुल भी कम नहीं था। पाकिस्तान के सिंध प्रांत से भी भगवान के लिए सामग्री भेजी गई, अफगानिस्तान की प्रसिद्ध पोशाक **अजरक** रामलला को समर्पित की गई। विश्व की सैंकड़ों नदियों के जल से भगवान का अभिषेक किया गया, विश्व के अनेकानेक देशों के प्रतिनिधि अयोध्या में आयोजित प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव में भी सम्मिलित हुए। इसी के साथ जब भारत में 22 जनवरी को दीपावली मनाई जा रही थी तब न्यूयॉर्क के टाईम्स स्क्वायर, पेरिस के टाईम्स स्क्वायर, ह्यूस्टन, होन्ग कोंग, अमेरिका और ब्रिटेन समेत विश्व के अनेकों देशों के प्रमुख स्थलों पर उत्सव मनाया जा रहा था।

सबके राम - शबरी के राम- अयोध्या प्राण प्रतिष्ठा के समाचार पर देश के सुदूर जंगलों -अंचलों में निवासरत जनजातीय समाज झूम उठा, ढोल -मांदल जैसे पारंपरिक वाद्यों से कलश यात्राएं और अक्षत कलश यात्राएं निकाली गई।

नानक के राम - श्री राम प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर सिख समाज ने गुरुद्वारों को रोशन कर दिया। सिख समाज ने घोषणा की, सिख समाज प्राण प्रतिष्ठा के तुरंत बाद श्रद्धालुओं की बढ़ती संख्या के लिए, अयोध्या में एक माह तक लंगर का आयोजन करेगा, जिसमें सिख समाज के जत्थे क्रमवार आएंगे और सेवा देंगे।

मंदिर फिर हुए सजीव- श्रीराम जन्मभूमि मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा के साथ ही देश में भक्तविहीन मंदिर पुनः सजीव हो गए। देश में 22 जनवरी को अनेकों नवनिर्मित मंदिरों की प्राण प्रतिष्ठा हुई और अनेकों जीर्ण-शीर्ण हो चुके मंदिरों का जीर्णोद्धार हुआ। निमाड़ के अकेले धार जिले में 50 मंदिरों के भूमिपूजन की खबर आयी। देश के मंदिरों में मकर संक्रांति से प्रारंभ हुए स्वछता अभियान और मंदिरों में राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा उत्सव ने जैसे अचैतन्य हो चुके हिन्दू समाज के इन चेतना स्थलों में पुनः प्राण फूँक दिए। कुल मिलाकर श्रीराम जन्मभूमि पर केवल एक मंदिर स्थापित नहीं हुआ है, बल्कि भारत का ऊर्जा केंद्र स्थापित हुआ है जो हमेशा देश को चैतन्य करता रहेगा, इसलिए श्रीराम जन्मभूमि मंदिर ही राष्ट्रमंदिर है।

हिंदी क्लास इन इंग्लिश

अ = पॉमग्रेनेट (अनार)

मैं अचंभित कम सदमे में ज्यादा हूं, जबसे मैंने अपने छः वर्षीय पोते के साथ पहली कक्षा की ऑनलाइन हिंदी क्लास अटैंड की है। मेरे लिए यह अजूबा अनुभव था। क्लास माइक्रोसॉफ्ट मीट पर आयोजित होनी थी। निर्धारित समय पर लेपटॉप स्क्रीन पर अवतरित होते हुए मैम बोली-'गुड मार्निंग चिल्ड्रेन, आई एम सिंदूरा आचार्य, योर हिंदी क्लास टीचर।' बच्चों ने अपने-अपने आडियो अनम्यूट करते हुए समवेत स्वर में 'गुडमार्निंग टीचर' का राग अलापा।

सिंदूरा मैम खुश होते हुए बोली - 'प्लीज म्यूट योर डिवाइसेस, आई विल फर्स्ट टेक योर अटेंडेंस एंड देन शो ए स्लाइड ऑफ नेटीकेट्स, सो प्लीज वाच केयरफुली।'

'ओके चिल्ड्रेन, टूडे वी विल लर्न हाऊ तो राइट स्माल अ एंड बिग आ'-सिंदूरा मैम बोली -'बच्चों मैं आपकी हिंदी टीचर हूं तो कभी-कभी हिंदी में भी बात करूंगी।' 'ओके मैम' - कुछ बच्चे माइक अनम्यूट करके (जो उनके स्मार्ट पैरेंट्स द्वारा किया गया था) बोले। 'थैंक्स गॉड, हिंदी की कक्षा में हिंदी सुनने को तो मिली', मैं मन ही मन बुदबुदाया।

'आई एम शेयरिंग माई स्क्रीन, यू केन सी हिंदी लेटर स्माल अ हेयर'- सिंदूरा मैम ने स्क्रीन शेयर की जिसमें अ के साथ अनार का चित्र बना था। उन्होंने आगे कहा- अनघा अनम्यूट योर सेल्फ और बताओ अ से कौन सा फल होता है।

'पॉमग्रेनट मैम' अनघा की आवाज सुनाई दी। 'वेरी गुड अनघा, नाऊ कीर्तिप्रिया यू टेल द नेम इन हिंदी।' कुछ पलों का सन्नाटा रहा। कीतिप्रिया कोई जवाब नहीं दे सकी। इसके बाद सिंदूरा मैम बोली - 'नाऊ इट्स ओपन फार आल, केन एनीबडी टेल।' मैंने अपने पोते की ओर देखते हुए धीरे से कहा-अनार। वह मेरी ओर इस तरह देखने लगा जैसे मैंने उसकी बेइज्जती कर दी हो। अंततः हार कर सिंदूरा मैम ही बोली-'चिल्ड्रेन लिसन केयरफुली, पॉमग्रेनेट इज काल्ड अनार इन हिंदी रिमेंबर स्माल अ फार अनार का उच्चारण किया। 'नाऊ वी विल लर्न टू राइट बिग आ, फर्स्ट यू राइट स्माल अ एंड देन ड्रा ए स्टैण्डिंग लाइन आफ्टर इट लाइक दिस'- सिंदूरा मैम ने राइटिंग बोर्ड पर लिखते हुए कहा-'हेव यू डन।' मेरा पोता बड़ा आ, नहीं नहीं सॉरी... बिग आ लिखने में व्यस्त था। मैंने अपने बेटे को आवाज दी- तुम्हीं इसके साथ बैठकर पढ़ाई कराओ, मुझे नहीं लगता कि मैं पहली कक्षा में भी पढ़ने के योग्य हूं। क्लास शुरू होने से पहले वाला मेरा उत्साह नदारद था।

लघु कथा

शबरी कलयुग की

सुषमा शर्मा श्रुति

माय (माँ) अयोध्या चलोगा कईं? (क्या) राम जी का दर्शन करने अमित ने पिचानवें वर्षीय बूढ़ी दादी से कहा नी (नहीं) जऊँगा (जाऊँगी) रे बेटा म्हारे (मुझे) तो घर अई (आकर) के दर्शन देगा भगवान अपना आँगन बुहारते हुए बोली कस्तुरी दादी।

अपनों से धोखा खा कर अपना सबकुछ दाँव पर लगा दिया कस्तुरी दादी ने।

छोटी सी झोपड़ी में गुजर बसर कर रही थी।

आँगनवाड़ी वाली बहन जी ने सहयोग कर निराश्रित पेंशन योजना के अंतर्गत दादी को हर माह कुछ राशि का इन्तजाम कर दिया था। सरकार की मदद से महिला आवास के रूपये मंजूर हो गये थे। और छोटे से घर का इन्तजाम हो गया।

आज दादी अपने नव-नूतन घर को सजा रही थी और भजन गा रही थी, मेरी झोपड़ी के भाग आज खुल जायेंगे राम आयेंगे और तभी पंचायत की ओर से कस्तुरी दादी से चार-पाँच लोग आए और कहा दादी आपसे कोई मिलने आया है कूण (कौन) आयो है रे भाई अपने चश्में को ठीक करते हुए बोली दादी।

तीस बरस से कोई (किसी) ने सुध नहीं ली है म्हारी, आज कौन कूण आयो हैं??

देखो तो सही कौन है दादी?

दादी ने कमर सीधी करते हुए कहा अरे इ तो म्हारा भारत का प्रधानमंत्री जी है। आओ बेटा कहती ही भाव विभोर दादी ने गले लगा लिया था सम्मानीय प्रधानमंत्री जी को और खटिया बिछा कर कहा बैठो म्हारा राम।

देख रे अमित म्हने कियो थो की नी, कि म्हारा राम खुद दर्शन देने आवेगा।

प्रतिक्षित आँखों से झर-झर अश्रु बह निकले दादी के।

आशा और विश्वास का नया भारत

अनीता जोशी

दुनिया का इतिहास पूछता, रोम कहां यूनान कहां,
लाता । वह उन्नत ईरान कहां?
दीप मुझे पश्चिमी गगन के, व्याप्त हुआ बर्बर अंधियारा,
किंतु चीर कर तम की छाती, चमक उठा हिन्दुस्तान हमारा।

अटल जी की ये पंक्तियां उनके उस अटल विश्वास की कहानी कहती हैं जो उन्हें भारत की शक्ति पर था। आज विश्व क्षितिज पर दमकता भारत इस बात की पुष्टि करता है। भारत मात्र एक देश नहीं एक पवित्र भाव है जो हम सब के हृदय में पलता है। और इसलिए ही 130 करोड़ भारतीय मिलकर इसकी प्रगति की नई गाथा लिख रहे हैं। आज विश्व पटल पर भारत के बुलंद हौसलों की हुंकार सुनाई दे रही है। अपनी सांस्कृतिक विरासत और उसके मूल में छिपी चेतना **सर्वे भवंतु सुखिनः, वसुधैव कुटुंबकम** के मंत्र से आज भारत ने दुनिया को चकित किया है।

75 वर्ष पूर्व जब सदियों के बाद संविधान की सौगात मिली थी तब लक्ष्य थे दुर्दांत, यात्राएं थीं दिगंत और चुनौतियां थीं अनंत पर भारत पूरे विश्वास के साथ उठ खड़ा हुआ। अपनी प्राचीन सिंधु सभ्यता की दिव्यता को पुन स्थापित करने के लिए। दो-दो युद्धों की आपदा को झेलते भारत ने हौसला नहीं खोया । पंच वर्षीय योजना, हरित क्रांति, श्वेत क्रांति, बैंकों का राष्ट्रीयकरण, उदारीकरण, परमाणु शक्ति परीक्षण की मजबूत नींव पर खड़ा है आज का भारत। सक्षम भारत, समर्थ भारत, आत्मनिर्भर भारत, आपका और मेरा भारत। वोकल से लोकल और लोकल से ग्लोबल तक का सफर तय करता और विश्व की तीसरी आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर मेरा भारत आज एशिया महाद्वीप की ऐसी ताकत बनकर उभरा है जिसे सभी टकटकी लगाकर देख रहे हैं।

मेड इन इंडिया के लेवल ने हर भारतीय के मन को इतना लुभाया है कि बिहार की मधुबनी पेंटिंग से उसने अपने घर को सजाया है। मध्य प्रदेश की चंदेरी, असम की मूंगा सिल्क, महाराष्ट्र की पेठणी साड़ी पहनकर माता-बहनों ने हर उत्सव मनाया है। आज मैसूर के चंदन की लकड़ी से बना बॉक्स हो या पारंपरिक बुनकरों द्वारा बनाई बनारस की गुलाबी **मीनाकारी** आभूषण या फिर जयपुर की कला और हस्तशिल्प की वस्तुएं शुभ अवसरों पर उपहार में देने का रिवाज बन गया है। यहीं नहीं रुका है भारत, वैज्ञानिकों के हौसलों ने अंतरिक्ष से हमें मिलवाया है मंगलयान की सैर के बाद चंद्रयान से हम चंदा मामा के घर घूम रहे हैं । आदित्य एल वन से आज हम सूर्य को अर्ध्य दे रहे हैं। हर क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की गूंज का ही नतीजा है कि भारत में बनने वाला आईएनएस विक्रांत विमान वाहक पोत समुद्र में अपनी ताकत का जलवा दिखा रहा है तो शुद्ध स्वदेशी तकनीक से बना तेजस लड़ाकू विमान गगन में तिरंगा फहरा रहा है।

वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्यूचर का संकल्प लिए जी20 की अध्यक्षता करने वाला भारत दुनिया के साथ मानवता की विरासत को साझा कर रहा है। संकट कहीं भी हो भारत की पहचान एक मददगार, देवदूत की बन गई है। भारत की भूमिका अब याचक की नहीं बल्कि दायक की है। सभी की आशा और आकर्षण का केंद्र बना है हमारा भारत और इस बात पर हर भारतीय गर्व से भरा है। भारतीय प्रतिभाएं आज सम्मान पा रही हैं। तकनीकी विकास में हम नंबर वन हैं। डिजिटल लेनदेन में हमने कीर्तिमान स्थापित किया है। ओलंपिक, पैरालंपिक और एशियाई गेम में हमारे खिलाड़ियों के उम्दा प्रदर्शन ने भविष्य के लिए उम्मीद जगाई है । इंटरनेशनल सोलर अलायंस, ग्लोबल वार्मिंग के विरुद्ध विश्व को भारत की एक उत्तम सौगात है। कलाकौशल,पर्यटन, स्वास्थ्य, यातायात हर क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन ने भारत की तस्वीर बदल दी है।

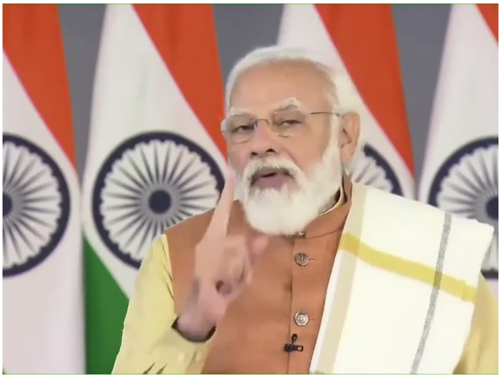

और एक सुखद अहसास उज्जैन में महालोक...,
काशी में कॉरिडोर और अयोध्या में राम ....

राम तो आ गए पर रामराज्य की कल्पना को साकार करने के लिए आवश्यक है कि भूख, गरीबी, बेरोजगारी से युद्ध स्तर पर निपटना होगा। तकनीकी और मशीनी युग में गुम होती संवेदनाओं को सहेजना होगा। सारे मतभेद भूल विघटनकारी शक्तियों के विरूद्ध एक होना होगा। राम में सच्ची आस्था रामराज्य की व्यवस्था को लागू करने में मदद करेगी इसी आशा का दीपक जलाए रखें। विश्वास बनाए रखें, यही तो हमारी थाती है।

भारत को समझना है तो प्रभु श्रीराम को समझना आवश्यक है

दुर्गेश कुमार साध

22 जनवरी 2024 का दिन भारतीय इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से लिखा जायेगा। इस दिन हमारे आराध्य प्रभु श्रीराम की जन्मस्थली अयोध्या में रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा होने जा रही है। भगवान श्रीराम का वनवास समाप्त होने के पश्चात् अयोध्या आगमन की स्मृति में हम हर वर्ष दीपावली मनाते तो अवश्य थे, मगर मन में सदैव यही टीस बनी रहती थी कि हमारे प्रभु को उनके जन्म-स्थान से दूर करने का कुकृत्य किया गया है। पराधीनता के किन्हीं दुर्दिनों में धर्म की नगरी अयोध्या में हमारे धर्मस्थल को तोड़कर विधर्मियों द्वारा वहॉं पर एक ढॉंचा बना दिया गया था। तिस पर भी हिन्दुओं की उदारता और संयम देखिये कि वे 500 वर्षों से सतत प्रशासनिक सीमाओं में रहकर क़ानूनी लड़ाई लड़ते रहे। सत्य को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती, यह बात हमारा समाज अच्छी तरह से जानता है (यह दीगर बात है कि हमारे आराध्य को काल्पनिक कहकर कोर्ट में भी हमारी धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाई गई) । उन्होंने हर एक प्रयास किये कि अयोध्या की जन्मभूमि किसी भी तरह से हिन्दुओं के हाथों में न पहुँचे। ईसाइयों और यहूदियों के लिए 'यरूशलम' का एवं मुस्लिम मतावलंबियों के लिए 'मक्का' का जो महत्व है, वही हिन्दुओं के लिए 'अयोध्या', 'मथुरा', 'काशी' आदि स्थानों का है। भगवान श्रीराम का मंदिर एक आततायी-आक्रांता ने तोड़ा था, जिसका हमारे देश और संस्कृति से कोई लेना-देना नहीं था। आक्रांता ने मंदिर को तोड़कर मस्जिद का निर्माण करवा दिया था। वह आक्रांता हमारे लोगों का आदर्श नहीं हो सकता। इस तथ्य को समझकर अगर भारत में रहने वाले अन्य-धर्मी उस आततायी द्वारा बनाए गए ढॉंचे को अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न न बनाते और हिन्दुओं की धार्मिक भावना का आदर करके मंदिर की ज़मीन हिन्दुओं को सहर्ष सौंप देते, तो इतने लंबे संघर्ष की कोई आवश्यकता ही नहीं पड़ती और पूरी दुनिया को भारत की असली पंथ-निरपेक्षता का साक्षात्कार हुआ होता। मगर दुर्भाग्य से ऐसा हुआ नहीं और हमें अपने ही देश में हमारे ही आराध्य का मंदिर बनवाने के लिए भी

लगभग 500 वर्षों तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। 'अंत भला तो सब भला' की तर्ज पर आखिरकार कोर्ट में भी सत्य की ही जीत हुई और मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा का मार्ग प्रशस्त हुआ।

भारत को समझना है तो आपको प्रभु श्रीराम को समझना अत्यंत आवश्यक है। भगवान श्रीराम भारत के मन-मन में बसे हैं। भगवान श्रीराम 'धर्म' के प्रतीक हैं, वे हमारे आदर्श हैं, आराध्य हैं और भारतीय मन की चैतन्यता हैं। प्रभु श्रीराम ने अपने संपूर्ण अवतार-काल में 'धर्म' और 'मर्यादा' की ही स्थापना की। भगवान राम भारतीय जनमानस में किस कदर व्याप्त हैं, यह इसी से समझा

जा सकता है कि हम आज भी आम बोलचाल में भगवान राम का सुमिरन अनायास ही किया करते हैं। जैसे- हमारा सर्वसामान्य अभिवादन आज भी 'राम-राम', 'जय श्रीराम' या 'जय राम जी की' ही है। आश्चर्य या दुःख प्रकट करना हो तो 'हे राम', दुनिया में आगमन पर 'कृपा राम की' और गमन हो तो 'राम नाम सत्य है'। कहने का तात्पर्य है कि हमारा संपूर्ण जीवन ही 'राममय' है। राम-नाम ही हमारे जीवन का मुख्य आधार है। राम-नाम के बिना हमारी कोई गति नहीं, कोई पहचान नहीं। राम सबके हैं और सब राम के ही हैं। चौदह बरस के वनवास के दौरान उन्होंने संदेश दिया कि वे नगरीय लोगों के भी उतने ही हैं, जितने कि वन में रहने वालों के। वे भील माता शबरी से मिलने उनकी कुटिया में भी जाकर प्रेमपूर्वक जूठे बेर भी ग्रहण करते हैं और वनवासी केवट निषाद राज को अपना भाई मानते हैं, क्योंकि उन्होंने एक ही गुरुकुल में रहकर शिक्षा प्राप्त की थी। भगवान राम की सेना में वानर, वनवासी, भालू इसीलिए हैं कि वे जीवमात्र में भेद नहीं करते। पत्थर की अहिल्या को छूकर उसमें भी जीवन का संचार करने वाले प्रभु श्रीराम के अतिरिक्त और कौन हो सकते हैं!

हमारा देश धर्म-सापेक्ष देश रहा है, अर्थात् जो भी धर्मानुकूल हो, वैसा ही आचरण हमें जीवन में उतारने की शिक्षा हमारा धर्म देता है। हमारा संविधान भी हमसे 'पंथ-निरपेक्षता' का आग्रह करता है, धर्म-निरपेक्षता का नहीं; क्योंकि धर्म, संसार में केवल एक ही है। रिलीजन या मज़हब, पंथ के पर्यायवाची हैं, धर्म के नहीं। हम पंथ-निरपेक्ष हैं, तो उसका आधार भी हमारा धर्म ही है, जो कहता है -'वसुधैव कुटुम्बकम्' यानी सारी धरती एक कुटुम्ब के समान है। यह एक वाक्य ही हमारे चिंतन को दर्शाने के लिए पर्याप्त है कि हम भेदरहित हैं। राजनीति अगर धर्म-सापेक्ष होगी, तो वह भी जन-भावनाओं के प्रतिकूल कभी नहीं जाती, इसमें कोई संशय नहीं, क्योंकि प्रजाहित उसमें अपने-आप आ ही जाता है। इसलिए आज भी आदर्श राज्य को 'रामराज्य' कहा जाता है। राजनीति में भी शुचिता केवल धर्मानुकूल आचरण के द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है। आज राजनीति में अगर गिरावट आ रही है, तो उसका कारण हमारा धर्म के प्रति विमुख होना ही है, इस तथ्य को अगर आज देश के अन्य दल जितनी जल्दी समझ लें, उनके लिए उतना ही अच्छा होगा। अयोध्या आंदोलन में जिन दलों ने भगवान राम की उपेक्षा की थी, वे आज राजनीति में अप्रासंगिक होकर हाशिये पर ढकेल दिये गये हैं। इस आंदोलन ने ही जनता के सामने उन नेताओं का असली चरित्र उजागर कर दिया था। यह भी एक राजनैतिक अपराध ही था कि एक समय 'जय श्रीराम' कहने को ही 'सांप्रदायिक' करार दे दिया गया था, जबकि राम-नाम से अधिक असांप्रदायिक कुछ हो ही नहीं सकता।

अयोध्या में भगवान राम की प्राण-प्रतिष्ठा से पूरे विश्व में हिन्दुओं को एक पहचान मिलेगी। यह एक तरह से हिन्दू-युग का पुनर्जागरण है। इस मंदिर के संघर्ष में हिन्दू धर्म के प्रत्येक व्यक्ति ने अपनी मानसिक और दैहिक आहुति दी है। यह संपूर्ण हिन्दू समाज का मंदिर है, एकमात्र इसी उद्देश्य से मंदिर बनने से पूर्व समाज के अंतिम व्यक्ति से उसकी क्षमता के अनुसार सहयोग-राशि ली गई थी। यह राम मंदिर हिन्दुओं के लिए सर्वस्पर्शी एवं सर्वदर्शी होगा, इसमें कोई संशय नहीं है। इस मंदिर के निर्माण ने एक नये हिन्दू-युग का सूत्रपात किया है, जिसकी गूँज सदियों तक सुनाई देती रहेगी।

राम ही हैं प्रार्थनाएं राम ही गंगाजली।

शिवांगी 'प्रेरणा'

राम ही हैं प्रार्थनाएं राम ही गंगाजली।
राम के आने से घर-घर मन रही दीपावली।

राम का इक नाम ही जीवन हमारा तार देगा
मन के रावण को प्रभू का नाम ही संहार देगा
राम ही तुलसी के मानस राम ही कवितावली
राम के आने से घर-घर मन रही दीपावली।

एक रिश्ता तुम बनालो अपने श्री रघुनाथ से
नाथ के चरणों की रज को फिर लगालो माथ से
राम ही बारहखड़ी हैं राम ही शब्दावली
राम के आने से घर-घर मन रही दीपावली।

लग रहा है स्वर्ग का वैभव अवध में आ गया
राम का मंदिर सभी देवों के मन को भा गया
झूमता सरयू का तट और नाचती है हर गली
राम के आने से घर-घर मन रही दीपावली।

ग्राम परिचय

मध्यप्रदेश के झाबुआ जिले की मेघनगर तहसील में वनवासी अंचल में स्थित एक ग्राम बड़ा घोसलिया है।

❖ इस गांव में संघ का संपर्क 1972 में हुआ।

❖ गांव के निवासी बाबू सिंह हाड़ा वनवासी कल्याण परिषद के छात्रावास में रहने के दौरान संघ के संपर्क में आए और गांव संघ कार्य प्रारंभ हुआ।

❖ 1974 में बाबू सिंह हाड़ा ने संघ शिक्षा वर्ग प्रथम का शिक्षण प्राप्त किया। गांव में संघ की शाखा प्रारंभ की।

❖ गांव में पहला 3 दिवसीय शिविर का आयोजन 1987 में हुआ जिसमें गांव के नरवर जी हाड़ा, महेंद्र जी हाड़ा सहित 22 लोग सहभागी हुए।

❖ सन 2006 में ग्राम विकास गतिविधि का काम प्रारंभ हुआ क्रमबद्ध किरण उदय ग्राम।

❖ 2009 में गांव को प्रभात गांव घोषित किया गया।

❖ इस गांव की आबादी 1500 के लगभग है । इस गांव में 190 के करीब घर है।

❖ इस गांव में अनुसूचित जनजातीय व सामान्य पिछड़ा वर्ग के लोग निवास करते हैं ।

❖ इस गांव में साक्षरता का प्रतिशत लगभग 90 प्रतिशत है।

❖ गांव के लोग अपनी आजीविका चलाने के लिए पशुपालन, खेती, व्यवसाय और नौकरी पर निर्भर हैं।

❖ इस गांव ने अपने आपको शासकीय निर्भरता को कम करने के लिए अपने गांव में एक बैंक प्रारंभ किया।

❖ इस बैंक के माध्यम से नल-जल योजना, गांव में मंदिर निर्माण, मंदिरों का रखरखाव और धार्मिक उत्सव, सामाजिक कार्यक्रम इस बैंक की बचत के द्वारा ही किए जाते हैं।

❖ गांव में सन 1999 में एक विद्यालय सरस्वती शिशु मंदिर के

नाम से प्रारंभ हुआ।

❖ वर्तमान में इस विद्यालय में दसवीं तक अध्ययन करने की व्यवस्था है व लगभग 450 बच्चे अध्यनरत हैं।

❖ सन 2011 में भैया जी दानी सेवन न्यास द्वारा प्रकल्प प्रारंभ किया गया जिसमें स्वावलंबन, नारी सशक्तिकरण, खेल, पर्यावरण आदि कार्य किए जाते हैं

❖ पर्यावरण की सुरक्षा की दृष्टि से गांव का एक बर्तन बैंक भी है। इन बर्तनों का उपयोग सभी धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रमों के सहभोज में किया जाता है, प्लास्टिक मुक्त अभियान के तहत इस बर्तन बैंक को बनाया गया। गांव के सभी धार्मिक, सामाजिक कार्य- उत्सव आदि सभी लोग मिलकर करते हैं । गांव में समरसता बनी हुई है।

❖ गांव के सभी लोगों का मंदिर में प्रवेश होता है साथ ही एक ही जगह से सभी को पीने का पानी उपलब्ध रहता है, व गांव का एक ही सामूहिक शमशान है। साथ ही सभी के घरों में सभी का प्रवेश होता है।

❖ गांव के दोनों मंदिरों पर पूजा पाठ व पंडिताई का काम एक वनवासी बंधु द्वारा ही किया जाता है।

❖ गांव के लोग अपनी संस्कृति,पारंपरिक लोक नृत्य आदि के संरक्षण के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं।

❖ गांव का एक विशेष आयोजन जिसमें बहन बेटी सम्मेलन आयोजित होता है।

❖ बच्चों के संस्कार हेतु विभिन्न धार्मिक आयोजनों में प्रतियोगितायें आयोजित की जाती हैं।

❖ युवाओं के लिए खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन।

❖ सभी प्रकार के उत्सवों का आयोजन या कोई भी धार्मिक कार्य का सामूहिक विचार होकर, सामूहिक प्रयास होता है।

❖ गांव की अपनी एक न्याय प्रणाली भी है जिसे **पंच** कहते है, के माध्यम से कई विवादों का हल निकाला जाता है।

त्याग - तपस्या को नमन

प्रधानमंत्री जी ने यहां आने से पहले कठोर तप रखा। जितना कठोर तप रखा जाना चाहिए था, उससे ज्यादा कठिन तप रखा। मेरा उनसे पुराना परिचय है। मैं जानता हूं, वे तपस्वी हैं ही। परंतु, वे अकेले तप कर रहे हैं। प्रधानमंत्री जी ने तप किया, अब हमें भी तप करना है। राम राज कैसा था, यह याद रखना है। हम भी भारत वर्ष की संतानें हैं। कोटि-कोटि कंठ हमारे हैं जो जयगान करते हैं।

श्री राम 14 वर्ष वनवास में गए और दुनिया के कलह को मिटाकर वापस आए। आज रामलला वापस फिर से आए हैं, पांच सौ वर्ष के बाद। जिनके त्याग, तपस्या, प्रयासों से आज हम यह स्वर्ण दिवस देख रहे हैं, उनका स्मरण प्राण-प्रतिष्ठा के संकल्प में हमने किया। उनकी तपस्या को, उनके त्याग को शत बार, सहस्त्र बार, कोटि बार नमन है।

इस युग में रामलला के यहां वापिस आने का इतिहास जो-जो श्रवण करेगा, वो राष्ट्र के लिए कर्म प्रवण होगा, और उसके राष्ट्र का सब दुख-दैन्य हरण होगा। ऐसे इस इतिहास का सामर्थ्य है।

प्रभु श्रीराम के आगमन की खुशी में उत्सव...

सुमन बृष्टि नभ संकुल भवन चले सुखकंद।
चढ़ी अटारिन्ह देखहिं नगर नारि नर बृंद॥

कृतज्ञता-ज्ञापन

आज रामलला के साथ भारत का **स्व** लौटकर आया है। आज के आनंद का वर्णन शब्दों में नहीं हो सकता है।

500 वर्षों तक अनेक पीढ़ियों ने लगकर, परिश्रम करके बलिदान देकर खून पसीना बहाने के बाद आज ये आनंद का दिन सारे राष्ट्र को उपलब्ध करा दिया, उन सबके लिए हमारे मन में कृतज्ञता है। - **सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी**

श्रीराम स्वर संगम

दिनांक 21 जनवरी को मालवा-निमाड़ के इंदौर महानगर रामेश्वर जिला के प्रसिद्ध रणजीत हनुमान मंदिर पर इंदौर विभाग के समस्त घोषवादकों का एकत्रीकरण आयोजित किया गया।

श्री रामलला के आगमन-पूर्व घोष-गर्जना कर घोषवादकों ने एक साथ, एक समय, एक स्थान पर, एक स्वर में गगनभेदी घोषवादन कर विश्व को श्री रामलला के विराजमान होने का शुभ संकेत दिया और घोष-धुन में श्रीराम-धुन को श्री रामलला के चरणों में अर्पित किया।

डॉ. हेडगेवार स्मारक समिती, स्मृती भवन परिसर, रेशमबाग.... में श्री रामलला के स्वागत में दीपमालिका और विद्युत सज्जा

अपने राम, अपनी भक्ति

धार में सकल हिन्दू समाज का सामूहिक रामरक्षा स्तोत्र का पाठ चल रहा है, तो उज्जैन में हर गली और हर द्वार के बाहर रंगोली बन रही है।

राम आवेंगे...

श्रीराम जन्मभूमि प्राणप्रतिष्ठा कार्यक्रम की झलकियाँ.......

राम पधारे अवधधाम, पुलकित हर घर द्वार है।
हर मन अयोध्या धाम है, विराजे जिसमें श्रीराम है।।

मार्च माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. 06 विजया एकादशी व्रत
ता. 08 अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस
ता. 12 स्वामी रामकृष्ण परमहंस जयंती
ता. 23 भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरू श.दि.
ता. 25 होली उत्सव, स्न्ना. दा. पूर्णिमा
ता. 28 गणेश चतुर्थी व्रत
ता. 30 रंगपंचमी

बुक-पोस्ट
जाग्रत मालवा

प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी, पोलोग्राउन्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यू इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731 -3551341